मधुबनी की संगीत परम्परा

डॉ शिव नारायण मिश्रा
(संगीत शिक्षक)
सूरज नारायण सिंह देव नारायण गुड़मैता
वाटसन–2 विद्यालय, मधुबनी

भारतवर्ष में संगीत के कई घराने एवं परम्पराएँ प्रचलित है द्यअनेक प्रांतो के कई कलाकारों ने राष्ट्रीय एवं अंतराष्ट्रीय स्तर पर अपनी पहचान बनाई है द्यबिहार के कई कलाकारों ने अपनी गायन,वादन शैली की प्रस्तुति से राष्ट्रिय एवं अंतराष्ट्रीय स्तर पर अपनी पहचान बनाकर अपने संगीत घराना एवं परम्पराओं से दुनिया को अवगत कराया है द्यभारत रत्न से सम्मानित उव बिसिम्ल्लाह खां ,पदमश्री पंव राम चतुर मल्लिक,पदमश्री सियाराम तिवारी आदि कई कलाकार बिहार संगीत घरानों से संबंध रखते है ।

मधुबनी संगीत परम्परा का इतिहास

बिहार में बेतिया घराना ,भागलपुर घराना ,दरभंगा घराना ,बड़हिया घराना ,पचगछिया घराना आदि का अपना इतिहास रहा है । यहाँ मै मधुबनी की संगीत परम्परा का वर्णन कर रहा हूँ द्य मधुबनी राज दरबार के संस्थापक कुमार कीर्ति सिंह (जन्म 1789 ,मृत्यु 1858)संगीत के प्रेमी थे द्यवे छात्र जीवन से ही बनारस में आयोजित संगीत समारोह में जाकर संगीत कार्यक्रम का आनंद लेते थे द्यइसी क्रम में उन्होंने धुपद गायक स्वव पंव मनसा मिश्रा (जन्म 1760,मृत्यु 1840)एवं स्वव पंव डीही मिश्रा (जन्म 1782,मृत्यु 1874)को अपने घर मधुबनी किसी मांगलिक अवसर पर संगीत कार्यक्रम प्रस्तुत करने हेतु आमंत्रित किये। इनके कार्यक्रम से प्रभावित होकर इन्हें मधुबनी में रहने का प्रस्ताव दिये एवं मधुबनी के राज संगीतज्ञ के रूप में नियुक्त कर दिये द्यसन 1815 ईव में स्वव कुमार कीर्ति सिंह ने दोनों कलाकारों को संगीत गरु के रूप में स्वीकार करते हुए अपने होम स्टेट लैंड ,बाबु साहेब चौक ,मधुबनी में रहने हेतु जमीन दिए तथा मकान बनवा दिए । यही से मधुबनी संगीत घराना की स्थापना मानी जाती है ।

मधुबनी संगीत घराना में जो संगीत का कार्यक्रम होता था उसका उद्देश्य सिर्फ मनोरंजन नहीं होता था बल्कि ईश्वर की आराधना एवं मन की शांति हेतु संगीत कार्यक्रम प्रस्तुत किये जाते थे। यहाँ कई अवसरों पर संगीत प्रतियोगिता का भी आयोजन किया जाता था । इस अवसर पर दुसरे शहरों से संगीत के कलाकारों को बुलाया जाता था तथा मधुबनी के कलाकारों के साथ संगीत कार्यक्रम एवं प्रतियोगिता का आयोजन किया जाता था । यदि बाहर से आये मेहमान कलाकार प्रतियोगिता में कुछ कमजोर भी पड़ते थे तो भी उनके आदर दृसत्कार एवं सम्मान में कोई भी कमी नहीं की जाती थी । लेकिन एक बात थी की यदि बाहर के कलाकार प्रतियोगिता में हार जाते थे तो उनका तानपुरा यही रख लिया जाता था। तथा उस स्थान पर उन्हें नया तानपुरा बनवाकर उपहार के तौर पर दिया जाता था । भारत के कई प्रसिद्ध कलाकारो द्वारा मधुबनी राज दरबार में संगीत कार्यक्रम प्रस्तुत किये जा चुके है।

मधुबनी घराने के कलाकारों की संगीत की प्रस्तुति आम जनता के समक्ष नहीं होती थी ये लोग राज दृदरबार के संगीत महाफिल में ही संगीत के कार्यक्रम प्रस्तुत करते थे या अपने पुत्र एवं शिष्य को संगीत सिखाने के क्रम में ही गाते या बजाते थे। संगीत परिवार के सदस्यों के भोजन वस्त्र से लेकर शादी विवाह तक में होने वाले सारे खर्चो का वहन राज दरबार के माध्यम से ही किया जाता था द्य संगीत घराने के कलाकार संगीत साधना के बाद बचे हुए समय में राज दृ दरबार के कार्यो में अपना विचार देते थे एवं धन सम्पति के आय दृ व्यय में मैनेजर के रूप में भी कार्य करते थे ।

मधुबनी संगीत परम्परा की वर्तमान स्तिथि

जमींदारी प्रथा समाप्त होने एवं भारत की आजादी के बाद धीरे दृ धीरे राज दरबार द्वारा आर्थिक सहयोग देना बंद कर दिया गया द्यजिस कारण कलाकारों की संगीत साधना में कुछ कमी होने लगी क्योंकि यदि दिनभर संगीत साधना में लगे रहते तो परिवार के सदस्यों का भरण दृ पोषण कैसे होता ?सरकार द्वारा भी कलाकारों को किसी भी प्रकार की मदद नही मिली । वावजूद यहाँ के कलाकारों ने संगीत को नहीं छोड़ा द्यपरन्तु जीविकोपार्जन करने के लिए अन्य माध्यमों से धन उपार्जन करते हुए भी संगीत परम्परा को बनाये हुए है ।

संगीत दृपरम्परा पीढ़ी दृदर पीढ़ी हस्तांतरित होती रही । स्व0 पं डीही मिश्रा को तीन पुत्र हुए द्यस्व पंव खरवान मिश्रा (जन्म 1795–1880). स्व पंव गुरई मिश्रा ((1798–1880) एवं स्वव पंव रामदत्त मिश्रा उर्फ शिव लाल मिश्रा (जन्म 1802–1885) ये तीनो भाई उच्च कोटी के कालकार थे द्यपूर्व में ये सभी राज दरबार में शास्त्रीय संगीत के कार्यक्रम प्रस्तुत करते थे तथा संगीत सिखाते भी थे द्यस्वव महाराज गिरधारी सिंह (जन्म 1832–मृत्यु 1881)ने स्व0 डीही मिश्रा से संगीत की शिक्षा प्राप्त किये थे द्य स्वव बाबू तंत्रधारी सिंह (जन्म 1864,मृत्यु 1916) ने स्वव सितु मिश्रा से गायन की शिक्षा प्राप्त किये थे । स्वव बाबू चन्द्र धारी सिंह, (जन्म 1896,मृत्यु –1981) भी संगीत के अच्छे जानकर थे द्यइन्होने स्व पंव सितु मिश्र, स्वव पंव हीरा मिश्रा एवं पंव झींगुर मिश्रा से संगीत शिक्षा प्राप्त किये थे ।

मधुबनी संगीत घराना के प्रसिद्ध कलाकारों में स्वव पंव खरवान मिश्रा ,स्वव पं सितु मिश्रा ,स्वव पंव हीरा मिश्रा ,स्वव पंव झींगुर मिश्रा ,स्वव भगत मिश्रा ,स्वव परमेश्वरी मिश्रा ,स्वव पंव कमलेश्वरी मिश्रा ,स्वव अनंत मिश्रा ,स्वव अद्या मिश्रा एवं स्वव पंव शारदा मिश्रा ,स्वव पंव नोखेलाल मिश्रा ,स्वव पंव अमृती लाल मिश्रा ,स्वव पंव हरिशंकर मिश्रा (उर्फ लल्लू मिश्रा)स्वव पंव रामजी मिश्रा द्यस्वव पंव कृष्णानन्द मिश्रा ,स्वव राधा देवी ,स्वव पार्वती मिश्र,स्वव दम्मन मिश्रा एवं स्वव भरत आदि प्रमुख थे ।

मधुबनी घराने के वर्तमान के कई बुजुर्ग, युवा एवं बाल कलाकार संगीत साधना में लगे हुए है एवं अपने स्तर से संगीत के क्षेत्र में कार्य करते हुए मधुबनी संगीत की परम्परा को आगे बढ़ा रहा है। स्वव अद्या मिश्रा के तीन पुत्र हुए स्वव पंडित राम जी मिश्रा स्वव लक्ष्मण मिश्रा एवं स्वव ललन मिश्र। तीनो भाइयो में पंडित रामजी मिश्रा अच्छे गायक थे। इन्हें 1956 ईव में छात्र जीवन में ही संगीत प्रतियोगिता में विजयी होने पर तत्कालीन राष्ट्रपति डॉव राजेंद्र प्रसाद से पुरस्कार एवं मेडल प्राप्त हुआ था । ये 1995 ईव में एल0 आर0 गर्ल्स हाई स्कूल,दरभंगा से संगीत शिक्षक पद से सेवानिर्वित हुए थे द्य आकाशवाणी दरभंगा से इन्हें शास्त्रीय गायन में बी ग्रेड प्राप्त थी । इनकी 10 पुत्रियाँ एवं एक पुत्र सभी संगीत से स्नातक की उपाधि प्राप्त कर चुके है एवं संगीत के क्षेत्र से जुड़े हुए है । इनकी बड़ी पुत्री श्रीमती आशा मिश्रा (माध्यमिक विदालय) श्रीमती विनीता मिश्रा (केन्द्रीय विदयालय),श्रीमती लक्ष्मी मिश्रा ,अर्पणा मिश्रा संगीत शिक्षिका पद पर कार्य कर रही है । इनके पुत्र सिद्धि शंकर भी मधुबनी घराना के युवा कलाकार है जो रेलवे विभाग हाजीपुर में कार्यरत है एवं संगीत से जुड़े हुए है ,एवं विभिन्न स्थानों पर तबला एवं संगीत कार्यक्रम करते हुए मधुबनी संगीत परम्पराओ को आगे बढ़ा रहे है ।

स्व० अनंत मिश्रा के चार पुत्र स्व० दुर्गा मिश्रा (लखनऊ) स्व० दम्मन मिश्रा (खुटौना)प० शीतल प्रसाद मिश्रा (लखनऊ) एवं स्व० सीताराम मिश्रा (खुटौना)भी संगति के क्षेत्र से जुड़े थे। प० शीतल प्रसाद मिश्रा युवा अवस्था से ही लखनऊ में रह रहे है एवं वहां तबला के श्रेष्ठ कलाकार के रूप में पहचान बनाये हुए है आप भातखंडे संगीत संस्थान (लखनऊ) में तबला अध्यापक पद से सेवा निर्वित हो चुके है एवं छात्र–छात्राओं को संगीत का प्रशिक्षण दे रहे है एवं कई संगीत कार्यक्रम में सामिल हो रहे है। पं० मिश्रा एक सफल तबला एवं पखावज वादक है।इनके पुत्र ,भतीजा एवं पुत्री भी संगीत के युवा कलाकार है ।

2014–2015 ईव में मधुबनी घराना के कलाकार दूसरा शताब्दी वर्ष (200 वर्ष)मनाये हैद्य इससे पूर्व कला संस्कृति एवं युवा विभाग पटना ,बिहार सरकार के सहयोग से मधुबनी की स्थानीय संस्था जन जागरण युवा समिति ,सह जागरण संगीत कला महाविद्यालय मधुबनी के तत्वाधान में 26 मई 2013 को नगर भवन ,मधुबनी में विद्यापति स्मृति समारोह एवं अखिल भारतीय संगीत समेल्लन सह – सम्मान समारोह का आयोजन किया गया द्यइस अवसर पर पंव बिरजू महाराज के शिष्य श्री वख्शी विकास (आरा)एवं बीव एचव युव संगीत शोध छात्रा सुश्री स्वप्नील सम्पदा का शास्त्रीय नृत्य ,का कार्यक्रम आयोजित किये गए द्यइस अवसर पर सैकड़ो कलाकारों के बीच संगीत प्रतियोगिता का आयोजन किया गया द्यमधुबनी संगीत घराना के 200 वर्ष पूर्ण होने पर मधुबनी में कई कार्यक्रम प्रस्तुत हुए । 21 जून 2015 को संगीत समेल्लंन –सह – कार्यशाला का आयोजन कला संस्कृति एवं युवा विभाग के सहयोग से जगदीश नंदन महाविद्यालय ,मधुबनी में आयोजित किया गया द्यइसके अंतर्गत जीवन में संगीत एवं कला का महत्व विषय पर कार्यशाला में कई विद्यानो ने अपने विचार प्रकट किये जिसमे डॉ पुष्पंम नारायण ,श्री गुप्ता ईश्वर चन्द्र प्रसाद (शिल्पकार) कुणाल जी (नाट्य निदेशक)श्री महेंद्र मलंगिया ,अध्यक्ष मैलोरंग पंव रमाकांत मिश्रा ,डॉव कुलधारी सिंह ,विधायक रामप्रित पासवान सहित कई गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे ।

मधुबनी संगीत घराने के प्रसिद्ध कलाकार स्वव पंव नोखे लाल मिश्रा के पुत्र स्वव पंव हरिशंकर मिश्रा (उर्फ लल्लू जी मिश्रा)उच्चकोटि के तबला वादक थे । आप सुचना एवं जन संपर्क विभाग में तबला वादक के पद पर कार्यरत थे ?सन 1969 ईव में कार्तिक मास में दवात (चित्रगुप्त)पूजा के दिन एक संगीत कार्यक्रम में आप दिलीप कुमार दास (वायलिन)के साथ संगत कर रहे थे परन्तु अचानक मंच पर ही आपकी मृत्यु रहस्मय ढंग से हो गई । प्रसिद्ध तबला वादक पंव सामता प्रसाद मिश्रा उर्फ गुदई महाराज (बनारस घराना)की लड़की की शादी आपके पुत्र पंव शिव शंकर मिश्रा से हुई है । पंव शिव शंकर मिश्रा वर्तमान में सुचना जन संपर्क विभाग ,राँची से तबला वादक के पद से सेवा निवृत हो चुके है द्यआपके छोटे भाई विजय शंकर मिश्रा कुशल तबला एवं नाल वादक है । इनके चचेरे भाई संजय मिश्रा भी तबला एवं नाल बजाते है,एवं वाराणसी में संगीत शिक्षक है एवं इनके पुत्र सर्वोतम मिश्रा एवं उतम मिश्रा बाल कलाकार है एवं संगीत का प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे है । संजय मिश्रा के बड़े भाई अजय मिश्रा के पुत्र धीरज मिश्रा मधुबनी संगीत परम्परा के युवा तबला वादक है ।

1972 सन् से हरिशंकर संगीत महाविद्यालय का संचालन स्वव कृष्णानंद मिश्रा कर रहे थे द्यउनकी पत्नी स्वव पार्वती मिश्रा सुड़ी उच्च विद्यालय में संगीत शिक्षिका थी । इनके बड़े पुत्र उदय शंकर मिश्रा केन्द्रीय विद्यालय दिल्ली में संगीत शिक्षक है छोटे पुत्र रवि शंकर मिश्रा ,पुत्री ज्योति मिश्रा,प्रीति मिश्रा संगीत के क्षेत्र से जुड़े है । स्वव कृष्णनंद मिश्रा के पौत्र सर्वश्रेष्ठ मिश्रा एवं आशुतोष मिश्रा युवा कलाकार है । इनकी नतनी शोम्या मिश्रा ने इंडियन आइडियल में बेहतर प्रस्तुति कर के अपनी अलग पहचान बना चुकी है ।

स्व0 पं शारदा मिश्रा के पुत्र पं रमाकांत मिश्रा सेवा निवृत शिक्षक है द्य इनकी शादी बनारस घराना के प्रसिद्ध तबला वादक पं गामा महाराज उर्फ (रामायण मिश्रा)की पुत्री स्वव श्रीमती राधा देवी से हुई थी । श्रीमती राधा देवी संगीत की अच्छी जानकर थी । ये कजरी,चौती एवं बनारसी लोकगीत बहुत ही अच्छी तरह गाती थी एवं तबला तथा

ढोलक भी बजाया करती थी 12 फरवरी 2012 को इनका निधन हो गया द्य पं रमाकांत मिश्रा के बड़े पुत्र श्री हरि नारायण मिश्रा सुड़ी उच्च विद्यालय मधुबनी में संगीत शिक्षक के पद पर कार्य कर रहे है छोटे पुत्र डॉ शिव नारायण मिश्रा वाटसन 2 विद्यालय मधुबनी में उच्च माध्यमिक संगीत शिक्षक पद पर कार्य कर रहे है द्य डॉ शिव नारायण मिश्रा अपने बड़े मामा स्वव रंगनाथ मिश्रा से तबला की उच्च स्तरीय शिक्षा प्राप्त करने के साथ डॉ लावन्य कृति सिंह काव्या , के निदेशन में संगीत से पी .एच. डी कर चुके है द्य संगीत,शिक्षण एवं समाजसेवा में विशेष योगदान के लिए बिहार सरकार के शिक्षा विभाग की ओर से 5 सितम्बर 2021 को बिहार के वर्तमान शिक्षा मंत्री श्री अशोक चौधरी द्वारा इन्हें राजकीय शिक्षक सम्मान प्रदान किया गया है । पं रमाकांत मिश्रा की पुत्री गंगा मिश्रा ,सरस्वती मिश्रा ,नाती दीनानाथ मिश्रा,बिरजू मिश्रा संगीत के जानकर है । रमाकांत मिश्रा के पौत्र एवं पौत्री प्रद्युम मिश्र, शिवानी मिश्रा ,शीतल मिश्रा,मानसी मिश्रा एवं शिवांश मिश्रा बाल कलाकार है एवं संगीत का प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे है। स्वव शारदा मिश्रा के छोटे पुत्र श्रीकांत मिश्रा की पुत्री श्रीमती अर्चना मिश्रा मधुबनी में संगीत शिक्षक के पद पर कार्य कर रही है एवं इनके पुत्र अर्पित आनंद,अपूर्व आनंद बाल कलाकार है। शारदा मिश्रा के पुत्र श्री श्यामकांत मिश्रा की पोती अंजलि मिश्रा एवं नंदिनी मिश्रा संगीत का प्रशिक्षण प्राप्त कर रही है ।

इस प्रकार हम कह सकते है की मिथिला क्षेत्र के हृदय स्थली मधुबनी की संगीत परम्परा कई वर्षों से चली आ रही है। यहाँ के बाल एवं युवा कलाकार संगीत साधना में लगे हुए है । डॉ शिव नारायण मिश्रा द्वारा स्थापित जागरण संगीत कला महाविद्यालय मधुबनी के माध्यम से मधुबनी के छात्र –छात्राओ की संगीत का प्रशिक्षण दिया जाता है एवं संगीत परीक्षाओ का भी आयोजन किया जाता है। साथ ही महाविद्यालय द्वारा हर वर्ष विश्व संगीत दिवस 21 जून को मधुबनी संगीत घराना का स्थापना दिवस मनाया जाता है एवं संगीत के कार्यक्रम प्रस्तुत किये जाते है ।

सन्दर्भ सूची :–

विभिन्न संगीत परम्पराओं के वाद्य एवं वादक